महिलाओं पर बढ़ती हुई हिंसा में पुरुषों की भूमिका

11 जनवरी 2013

जेण्डर समानता के लिए फोरम टू इंगेज मेन द्वारा पुरुषों का आवाहन

आयोजकः सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस (सी.एच.एस.जे.) और संगत–साउथ एशिया

संदर्भ और पुरुषों के साथ काम करने का मूलाधार

फोरम टू इंगेज मेन (फेम) फोर जेण्डर इक्वालिटी हाल ही में दिल्ली की एक बस में हुये सामूहिक बलात्कार की घटना को लेकर अति चिंतित है और इसकी घोर निंदा करता हैं। परन्तु, हम अपनी चिंता प्रकट करना चाहते हैं हिंसा के इन तमाम मुद्दों पर। मीडिया में जो सुझाव आ रहे हैं–पुलीस का संरक्षण बढ़ाना, बसों के शीशों को पारदर्शी बनाना, इत्यादि, बेशक जरूरी हैं, पर यह सब रोग के लक्षणों को ही छूते हैं जबकि अब जरूरत हैं रोग की जड़ तक पहुंचने की– जेंडर असमानता और पुरुषत्व के सुदृढ़ मुद्दे जो इस हिंसा को बढ़ावा देते हैं। हम मानते हैं कि न्याय को तीव्र बनाना और पुलीस का संरक्षण महत्वपूर्ण है, पर हम यह नहीं मानते की केवल अधिक पुलिस ही उस सामाजिक मान्यता को चुनौती दे सकती है जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा का समर्थन करती है और महिलाओं को अलग दृष्टि से देखती है। कहने का अर्थ यह है कि यौनिक हिंसा के मूल कारणों में कोई परिवर्तन नहीं आएगा केवल पुलिस बल में परिमाणात्मक वृद्धि से अगर इसके साथ जेंडर संबंधों के प्रति पुलिस का रवैया नहीं बदलेगा।

हम यह मानते है कि दोनों अल्पकालिक और दीर्घकालिक युक्तियों की आवश्यकता है। अल्पकालिक कदमों में शामिल है महिलाओं और यौनिक हिंसा के प्रति बदला हुआ पुलिस और न्यायपालिका का सामाजिक नजरिया, व्यावहारिक आश्वासन की अगर कोई निरपराध दर्शक पीड़ित की सहायता करता है तो उसे खुद पुलिस केस में नहीं फसाया जायेगा और बलात्कार के केस की तीव्र सुनवाई। दीर्घकालीन कदमों में, जो हम मानते हैं की ज्यादा प्रभावी हैं यौनिक हिंसा की घटनाओं को कम करने में, जरूरी है की हम बात करें की हम अपने बेटों की कैसे परिवरिश कर रहे हैं। यह जड़ हैं पुरुषों की महिलाओं के प्रति रवैया की और जड़ है महिलाओं के प्रति हिंसा की। दीर्घकालीन कदमों में शामिल होने चाहिए– शिक्षालय के पाठ्यक्रम में जेंडर समानता होना, हिंसा और मर्दानगी के संबंधों पर विशेष प्रकल्प आर वह प्रकल्प जो सवाल उठाते हैं उस अवधारणा पर जो कहती है की ''एक महिला के लिए बलात्कार से बुरा कुछ नहीं हैं।'' यह आखरी अवधारणा, विशिष्ट रूप से एक तरह की मर्दानगी ही है जिसे पीड़ित महिला की चिंता नही है बल्कि मजबूत करता है मर्दानगी की प्रतिष्ठा जहां एक पुरुष को लगता है कि वह अपनी महिला की रक्षा नहीं कर पाया। निश्चित तौर पर यही नजरिया है जो जेंडर असमानता और महिला हिंसा, खासकर यौनिक हिंसा की जड़ है। पिछले कई वर्षों से स्वीकृति बनी है पुरुषों के साथ महिला हिंसा के खिलाफ और जेंडर समानता पर कार्य करने की। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अन्यथा यह मुद्दा केवल महिलाओं का मुद्दा हो कर रह जाता है

और पुरुषों की अपराधिकता एक जेंडर समूह के तौर पर नजरअंदाज कर दी जाती है और कई पुरुष जो स्वयं हिंसात्मक नहीं है, इस जेंडरगत सामाजिक समस्या से अलग कर दिए जाते है।

पुरुषों के साथ कार्य का एक परिचय

एक छोटा पर महत्वपूर्ण अध्ययन संग्रह उभरा है पुरुषों के साथ महिला हिंसा के खिलाफ हुए काम पर, महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर और एचआईवी/एडस पर। यह भी समझ बनी है कि पुरुषों का ताकत से संबंध केवल जेंडर (स्त्री–पुरुष) का मुद्दा नहीं है बल्कि इसे मर्दानगी और पुरुषों की ताकत, उनके विशेषाधिकार और अलग–अलग सामाजिक और सांस्कृतिक मानकों पर अधीनता जैसी बारीकियों से जांचना पड़ेगा।

भारत में, पुरुषों के साथ जेंडर पर कार्य निकल कर आया है नारीवाद आन्दोलन से और भिन्न शैक्षिक विषयो से जिनका संबंध जेंडर अध्ययन से है।

उमड़ते सौ करोड़ (वन बिलियन राइजिंग)

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार – हर तीन में से एक औरत हिंसा का सामना करती है, यानि दुनिया में 100 करोड़ औरतें हिंसा का ि"ाकार हो रही हैं। इस से बड़ा गृह युद्ध और इस से ज़्यादा मानव अधिकारों का उलंघन कोई और नहीं है। इस हिंसा को चुनौती देने और ख़त्म करने के लिये अब उठ रहा है यह एक आम अभियान नहीं है। यह एक प्रण है कि हिंसा और बलात्कार की संस्कृति ख़त्म हो! लोगों की सोच बदले, समाज बदले, दे"ा और दुनिया बदले!!

14 जनवरो 2013 को यह अभियान दुनिया को झकझोर देने का इरादा रखता है। दुनिया भर के दे"ा इस अभियान में हिस्सा ले रहे हैं।

हम जहां भी हों, जैसे भी हों, जो भी करें, बस एक ही हमारा प्रण हो– औरतों और लड़कियों पर होने वाली हिंसा को जड़ से मिटाना है। दक्षिण एषिया में औरतों और उनके हक़ों, मान–सम्मान को मानने वालों को आह्वान है, कि वे यह एलान करें – बस्स! औरतों पर हिंसा अब और नहीं हम जहाँ भी हों वहाँ उमड़ें। कोई गाँव, शहर, बस्ती, मोहल्ला, स्कूल, कॉलेज, बाज़ार, ऑफिस बिना उमड़े न रहे। उमड़ते सौ करोड़ प्रतीक हैं हमारी विश्वव्यापी, सामूहिक ताक़त और सद्भावना का।

उमड़ते सौ करोड के आंरभ 24 नवम्बर 2012 के दिन कई संस्थाओं, नेटवर्क और लोगों ने अपना हिंसा के खिलाफ प्रण दोहराया था। 160 देशों का हस्ताक्षर पाए हुए इस अभियान में फेम ओर मैसवा का प्रतिनिधित्व करते हुए डा॰ अभिजोत दास ने यह कहा कि पुरुष भी महिलाओं के साथ इस लड़ाई में शामिल हैं और हो रही हिंसा को समाप्त करने में पुरी तरह से जुटेंगे।

पुरुषों का आवाह्न और इस गोष्ठी की जरूरत

भारत के करोड़ों पुरुष इस अधिपत्य की धारणा से प्रभावित है जो मानती है कि पुरुष अपनी ताकत केवल हिंसा और आक्रामक व्यवहार से ही अभिव्यक्त कर सकते हैं। हमें यह स्थापित करना होगा कि पुरुष प्राकृतिक रूप से आक्रामक नहीं है बल्कि यह मर्दानगी की दोषपूर्ण संरचना है जो प्रचलित है समाज में पित्रसत्ता की वजह से और उस पित्रसत्ता का महिलाओं के उपर नियंत्रण की वजह से। समय आ गया है कि हम पुरुष बाकी पुरुषों को इस चर्चा में शामिल करें, समय आ गया है की हम पुरुष दिखाएं की हम अहिंसात्मक जीवन जी सकते है, और हम खड़े हैं महिलाओं के हक के लिए को वह जेंडरगत भेदभाव से मुक्त जीवन जी सके।

फोरम टू एंगेज मेन, संग सी.एच.एस.जे और संगत–साउथ ऐशिया एक गोष्ठी का आयोजन कर रहा है 11 जनवरी 2013 को, यह चर्चा करने के लिए की पुरुषों को जेंडर समानता की लड़ाई में कैसे शामिल किया जाये। हम आवाह्न देते हैं सभी चिंतित पुरुषों और युवाओं की वह आगे आये और विचार करें इस मुद्दे पर, अपनी समझ पर और यह जांचे की आज अपने आप को कहां खड़ा पाते हैं हिंसा और जेंडर समानता के मुद्दे पर।

हमारा निवेदन है कि हमारा संपर्क उन पुरुषों से करवाएं जो आत्म चिंतन की प्रक्रिया में हैं। हम ऐसा मंच तैयार करना चाहते हैं जहां यह पुरुष बातचीत करें, अपनी अपनी चिंताएं बाटे, कुछ सीखें और आगे की रणनीतियों पर चर्चा करें।

आयोजक

फोरम टू इंगेज मेन (फेम)

फेम एक नेटवर्क है जिसमें कई लोग और संस्थाए शामिल है जो कार्य कर रही है देश के विभिन्न संदर्भो से आये पुरुषों को जेंडर समानता की इस लड़ाई में जोड़ने पर। आगे की लड़ाई कठिन है पर हमारा अनुभव बताता है कि पुरुष बदल सकते हैं और सामाजिक तौर पर जबावदेहो बन सकते हैं अच्छे पति, पिता और जिम्मेदार नागरिक बनकर ।
अधिक जानकारी के लिए देखें www.femindia.net

सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस (सी.एच.एस.जे.)

सी.एच.एस.जे. एक राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली संस्था है जो मुख्यत काम करती है स्वास्थ्य, जेडर समानता और सामाजिक न्याय पर। उसके कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग रहा है पुरुषों और युवाओं को प्रेरित करना महिला हिंसा और घर और समाज में जेंडर भेदभाव के खिलाफ काम करने के लिए। उसके कार्यकर्ता पिछले एक दशक से अधिक से जेंडर के मुद्दों से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में पुरुषों और युवाओं के साथ जेंडर समानता का काम अलग अलग राज्यों में चल रहा है जैसे उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश जहां कोशिश करी जा रही है कि पुरुष अपने व्यवहार में परिवर्तन लाये और बाकी पुरुषों को भी प्रेरित करें।

अधिक जानकारी के लिए देखें www.chsj.org

संगत–साउथ एशिया

कुछ दक्षिण एशियाई भाषाओं में संगत शब्द का मतलब है एक उचित और न्यायसंगत कारणों के लिए समान विचारधारा वाले लोगों का समुदाय या एकत्रित होना। अप्रैल 1998 में संगत को संरचना हुई – जेण्डर प्रशिक्षकों की दक्षिण एशियाई कार्यशाला में जो कि बांगलादेश में एफ.ए.ओ. गैर सरकारी संगठन दक्षिण एशिया कार्यक्रम द्वारा आयोजित की गई थी। एक तरह से संगत, कमला भसीन द्वारा चलाई जा रही एफ.ए.ओ. गैर सरकारी संगठन दक्षिण एशिया कार्यक्रम, जो कि पिछले 25 वर्षो से काम कर रही है, का ही विस्तार है। वर्तमान संगत, जागोरी नई दिल्ली की एक परियोजना है।

संगत इस एहसास के साथ बनाया गया था कि दक्षिण एशिया में जेण्डर में बदलाव के काम की जगह तेजी से सिकुड़ रही है। यह बात बहुत दृढ़ता से महसूस और व्यक्त की गई की दक्षिण एशियाई जेण्डर कार्यकर्ताओं और प्रशिक्षकों का नेटवर्क बनाना बहुत जरूरी है। सार्थक दक्षिण एशियाई प्रगति के लिए समझ शांति और सहयोग बहुत जरूरी है, इस धारणा ने क्षेत्रीय गठबंधन के गठन को प्रेरित किया।

दक्षिण एशिया में वास्तविक विकास, लोकतंत्र और शांति तभी सम्भव है जब हम दक्षिण एशिया की अलग पहचान और दृष्टिकोण का विकास कर पाये। इसलिए संगत का अधिदेश केन्द्रित है क्षेत्रीय/सीमा पार दृष्टिकोणों, कार्यक्रमो और सहयोग का इन गतिविधियों और कार्यक्रमों द्वारा विकास और मजबूत बनाने में।

अधिक जानकारी के लिए देखें http://www.sangatsouthasia.org